श्री जगन्नाथ दासार्य विरचित

॥ श्री लक्ष्मी हृदय स्तोत्रम् ॥

श्री मनोहरॆ लकुमि तवपद तामरसयुग भजिपॆ नित्यदि
सोमसोदरि परममंगळॆ तप्तकांचनळॆ ।
सोमसूर्यसुतेजोरूपळॆ हेमसन्निभ पीतवसनळॆ
चामीकरमय सर्वभूषण जालमंडितळॆ, भूषण जालमंडितळॆ ॥ १ ॥

बीजपूरित हेमकलशव राजमान सुहेम जलजव
नैज करदलि पिडिदुकॊंडु भकुतजनततिगे ।
माजदलॆ सकलेष्ट नीडुव राजमुखि महदादिवंद्यळॆ
मूजगत्तिगॆ मातॆ हरिवामांकदॊळगिर्प, हरिवामांकदॊळगिर्पॆ ॥ २ ॥

श्री महत्तर भाग्यमानियॆ स्तौमि लकुमि अनादि सर्व सु-
काम फलगळनीव साधन सुखवकॊडुतिर्प ।
कामजननियॆ स्मरिपॆ नित्यदि प्रेमपूर्वक प्रेरिसॊन्ननु
हे महेश्वरि निन्न वचनव धरिसि भजिसुवॆनु, धरिसि भजिसुवॆनु ॥ ३ ॥

सर्व संपदवीव लकुमियॆ सर्व भाग्यवनीव देवियॆ
सर्वमंगळवीव सुरवर सार्वभौमियळॆ ।
सर्व ज्ञानवनीव ज्ञानियॆ सर्व सुखफलदायि धात्रियॆ
सर्वकालदि भजिसि बेडिदॆ सर्व पुरुषार्थ, बेडिदॆ सर्व पुरुषार्थ ॥ ४ ॥

नतिपॆ विज्ञानादि संपद मतिय निर्मल चित्र वाक्पद
ततिय नीडुवदॆनगॆ सर्वद सर्व गुणपूर्णॆ ।
नतिप जनरिगनंतसौख्यव अतिशयदि नीनित्त वार्तॆयु
विततवागिहदॆंदु बेडिदॆ भक्तवत्सलळॆ, बेडिदॆ भक्तवत्सलळॆ ॥ ५ ॥

सर्व जीवर हृदय वासिनि सर्व सार सुभोक्त्रे सर्वदा
सर्व विश्वदलंतरात्मके व्याप्ते निर्लिप्ते ।
सर्व वस्तु समूहदोळगे सर्व कालदि निन्न सहितदि
सर्व गुण संपूर्ण श्री हरि ताने इरुतिर्प, श्री हरि ताने इरुतिर्प ॥ ६ ॥

तरिये नी दारिद्य शोकव परिये नीनज्ञान तिमिरव
इरिसु त्वत्पद पद्ममन्मनो सरसि मध्यदलि ।
चरर मनसिन दुःख भंजन परम कारणवेनिप निन्नय
करुणपूर्ण कटाक्षदिंदभिषेक नी माडे, अभिषेक नी माडे ॥ ७ ॥

अंबा ऐनगे प्रसन्नळागि तुंबि सूसुव परम करुणा -
वेंब पीयुष कणदि तुंबिद दृष्टि तुदियिंद ।
अंबुजाक्षिये नोडि ऐन्न मने तुंबिसीगले धान्य धनगळ
हंबलिसुवेनु पादपंकज नमिपेननवरत, नमिपेननवरत ॥ ८ ॥

शांतिनामके शरण पालके कांतिनामके गुणगणाश्रये
शांतिनामके दुरितनाशिनि धात्रि नमिसुवेनु ।
भ्रांतिनाशनि भवद शमदिंश्रांतनादेनु भवदि ऐनगे नि-
तांत धन निधि धान्य कोशवनित्तु सलहुवुदु, इत्तु सलहुवुदु ॥ ९ ॥

जयतु लक्ष्मी लक्षणांगिये जयतु पद्मा पद्मवंद्यळे
जयतु विद्या नामे नमो नमो विष्णुवामांके ।
जयप्रदायके जगदिवंद्यळे जयतु जय चेन्नागि संपद
जयवे पालिसु ऐनगे सर्वदा नमिपेननवरत, नमिपेननवरत ॥ १० ॥

जयतु देवी देव पूज्यळे जयतु भार्गवि भद्र रूपळे
जयतु निर्मल ज्ञानवेद्यळे जयतु जय देवी ।
जयतु सत्याभूति संस्थिते जयतु रम्या रमण संस्थिते

जयतु सर्व सुरत्न निधियॊळगिर्पे नित्यदलि, निधियॊळगिर्पे नित्यदलि ॥ ११ ॥

जयतु शुद्धा कनक भासळॆ जयतु कांता कांति गात्रळॆ
जयतु जय शुभ कांतॆ शीघ्रदॆ सौम्य गुण रम्ये ।
जयतु जयगळदायि सर्वदा जयवॆ पालिसु सर्व कालदि
जयतु जय जय देवि निन्ननु विजय बेडिदॆनु, विजय बेडिदॆनु ॥ १२ ॥

आव निन्नय कॆळॆगळिंदलि आ विरिंचियु रुद्र सुरपति
देव वरमुख जीवरॆल्लरू सर्वकालदलि ।
जीवधारणॆ माडोरल्लदॆ आव शक्तियू काणॆनवरिगॆ
देवि नी प्रभु निन्न शक्तिलि शक्तरॆनिसुवरु, शक्तरॆनिसुवरु ॥ १३ ॥

आयु मॊदलागिर्प परमादाय सृष्टिसु पालनादि स्व-
कीय कर्मव माडिसुवि निनगारुसरियुंटे ।
तोयजालयॆ लोकनाथळॆ तायॆ ऎन्ननु पॊरॆयॆ ऎंदु
बायि बिडुवॆनु सोकनीयन जायॆ मां पाही, जायॆ मां पाही ॥ १४ ॥

बॊम्म ऎन्नय फणॆय फलकदि हम्मिनिंदलि बरॆद लिपियनु
अम्म अदननु तॊडॆदु नी ब्यरिब्यारॆ विधदिंद ।
रम्यवागिह निन्न करुणा हर्म्यदॊळगिरुतिर्प भाग्यव
घम्मनॆ दॊरॆवंतॆ ई परि निर्मिसोत्तमळॆ, निर्मिसोत्तमळॆ ॥ १५ ॥

कनक मुद्रिकॆ पूर्ण कलशव ऎनगॆ अर्पिसु जनुम जनुमदि
जननि भाग्यदभिमानि निनगभिनमिसि बिन्नैपॆ ।
कनसिलादरु भाग्य हीननु ऎनिसबारदु ऎन्न लोकदि
ऎनिसु भाग्यद निधियु परि परि उणिसु सुखफलव, ऒणिसु सुखफलव ॥ १६ ॥

देवि निन्नय कळॆगळिंदलि जीविसुवुदी जगवु नित्यदि
भाविसीपरि ऎनगॆ संतत निखिल संपदव ।
देवि रम्य मुखारविंदळॆ नी ऒलिदु सौभाग्य पालिसु
सेवकाधमनॆंदु ब्यागनॆ ऒलियॆ नी ऎनगॆ, अम्मा, ऒलियॆ नी ऎनगॆ ॥ १७ ॥

हरिय हृदयदि नीनॆ नित्यदि इरुव तॆरदलि निन्न कळॆगळु
इरलि ऎन्नय हृदय सदनदि सर्वकालदलि ।
निरुत निन्नय भाग्य कळॆगळु बॆरॆतु सुखगळ सलिसि सलहलि
सिरियॆ श्रीहरि राणि सरसिज नयनॆ कल्याणि, सरसिज नयनॆ कल्याणि ॥ १८ ॥

सर्व सौख्य प्रदायि देवियॆ सर्व भक्तरिगभय दायियॆ
सर्व कालदलचल कळॆगळ नीडु ऎन्नल्लि ।
सर्व जगदॊळु घन्न निन्नय सर्व सुकळा पूर्णनॆनिसि
सर्व विभवदि मॆरॆसु संतत विघ्नविल्लदले , विघ्नविल्लदले ॥ १९ ॥

मुददि ऎन्नय फालदलि सिरि पदुमॆ निन्नय परम कळॆयू
ऒदगि सर्वदा इरलि श्री वैकुंठ गत लक्ष्मी ।
उदयवागलि नेत्रयुगळदि सदय मूर्तियॆ सत्यलोकद
चदुरॆ लकुमियॆ कळॆयु वाक्यदि निलिसलनवरत, निलिसलनवरत ॥ २० ॥

श्वेत दिवियॊळगिरुव लकुमियॆ नीतवागिह कळॆयु नित्यदि
मातॆ ऎन्नय करदि संतत वासवागिरलि ।
पाथो निधियॊळगिर्प लकुमियॆ जातकळॆयु ममांगदलि सं-
प्रीति पूर्वकविरलि सर्वदा पाही मां पाही, पाही मां पाही ॥ २१ ॥

इंदु सूर्यरु ऎल्लि तनक कुंददलॆ ताविरुवरो सिरि
इंदिरेशनु याव कालद तनक इरुतिर्प ।
इंदिरात्मक कळॆय रूपगळंदिनद परि अंतरिर्पवु

कुंदु इल्लदे ऐन्न बळियलि तावॆ नॆलसिरलि, तावॆ नॆलसिरलि ॥ २२ ॥

सर्वमंगळॆ सुगुण पूर्णळॆ सर्व ऐश्वर्यादिमंडितॆ
सर्व देवगणाभिवंद्यळॆ आदिमहालक्ष्मी ।
सर्वकळॆ संपूर्णे निन्नय सर्वकळॆगळु ऐन्न हृदयदि
सर्वकालदलिरलि ऎंदु निन्न प्रार्थिसुवॆ, निन्न प्रार्थिसुवॆ ॥ २३ ॥

जननी ऐन्न अज्ञान तिमिरव दिनदिनदि संहरिसि निन्नव-
नॆनिसि ध्यानव माळ्प निर्मल ज्ञान संपदवा ।
कनक मणि धन धान्य भाग्यव इनितु नी ऐनगित्तु पालिसु
मिनुगुतिह घनवाद निन्नय कळॆयु शोभिसलि, निन्नय कळॆयु शोभिसलि ॥ २४ ॥

निरुत तमतति हरिप सूर्यन तॆरदि क्षिप्रदि हरिसलक्ष्मिय
सरकु माडदे तरिदु ओडिसु दुरित राशिगळा ।
परिपरिय सौभाग्य निधियनु हरुषदिंदलि नीडि ऐन्ननु
थरथरदि कृत कृत्यनिळॆयॊळगॆनिसु दयदिंद, ऐनिसु दयदिंद ॥ २५ ॥

अतुळ महदैश्वर्य मंगळततियु निन्नय कळॆगळॊळगॆ
विततवागि विराजमानदलिर्प कारणदी ।
श्रुतियु निन्नय महिमॆ तिळियदु स्तुतिसबल्लॆने तायॆ पेळ्वुदु
मतिविहीननु निन्न करुणकॆ पात्रनॆनिसम्म, करुणकॆ पात्रनॆनिसम्म ॥ २६ ॥

निन्न महादावेश भाग्यकॆ ऐन्न अर्हन माडु लकुमियॆ
घन्नतर सौभाग्य निधि संपन्ननॆनिसॆन्न ।
रन्नॆ निन्नय पादकमलव मन्नदलि संस्तुतिसि बेडुवॆ
निन्न परतर करुण कवचव तॊडिसि पॊरॆयम्म, कवचव तॊडिसि पॊरॆयम्म ॥ २७ ॥

पूत नरननु माडि कळॆगळ व्रातदिंदलि ऎन्न निष्ठव
घातिसीगलॆ ऎनगॆ ऒलिदु बंदु सुळि मुंदॆ ।
मातॆ भार्गवि करुणि निन्नय नाथनिंदॊडगूडि संतत
प्रीतळागिरु ऎन्न मनॆयॊळु निल्लु नी बिडदे, मनॆयॊळु निल्लु नी बिडदे ॥ २८ ॥

परमसिरि वैकुंठ लकुमियॆ हरिय सहितदलॆन्न मुंदकॆ
हरुष पडुतलि बंदु शोभिसु काल कळॆयदले ।
वरदॆ ना बारॆंदु निन्ननु करॆदॆ मनवनु मुट्टि भकुतिय
भरदि बागिद शिरदि नमिसुवॆ कृपॆय माडॆंदु, कृपॆय माडॆंदु ॥ २९ ॥

सत्यलोकद लकुमि निन्नय सत्य सन्निधि ऎन्न मनॆयलि
नित्य नित्यदि पॆर्चि हब्बलि जगदि जनततिगॆ ।
अत्यधिक आश्चर्य तोरिसि मर्त्यरोत्तमनॆनिसि नी कृत
कृत्यनीपरि माडि सिरि हरिगूडि नलिदाडे, हरिगूडि नलिदाडे ॥ ३० ॥

क्षीरवारिधि लकुमिये पतिनारसिंहन कूडि बरुवुदु
दूर नोडदॆ सारॆगॆरॆदु प्रसाद कॊडु ऎनगॆ ।
वारिजाक्षियॆ निन्न करुणासार पूर्ण कटाक्षदिंदलि
बारि बारिगॆ नोडि पालिसु परम पावन्ने, परम पावन्ने ॥ ३१ ॥

श्वेत द्वीपद लकुमि त्रिजगन्मातॆ नी ऎन्न मुंदॆ शीघ्रदि
नाथनिंदॊडगूडि बारॆ प्रसन्न मुख कमले ।
जातरूप सुतेजरूपळॆ मातरिश्व मुखार्चितांघ्रियॆ
जातरूपोदरांड संघकॆ मातॆ प्रख्यातॆ, मातॆ प्रख्यातॆ ॥ ३२ ॥

रत्नगर्भन पुत्रि लकुमियॆ रत्नपूरित भांड निचयव
यत्नपूर्वक तंदु ऎन्नय मुंदॆ नी निल्लु ।

रत्नखचित सुवर्णमालॆय रत्नपदकद हार समुदय
जत्नदिंदलि नीडि सर्वदा पाही परमाप्तॆ, पाही परमाप्तॆ ॥ ३३ ॥

ऎन्न मनॆयलि स्थैर्यदिंदलि इन्नु निश्चलळागि निंतिरु
उन्नतादैश्वर्य वृद्धियगैसु निर्मलळॆ ।
सन्नुतांगियॆ निन्न स्तुतिपॆ प्रसन्न हृदयदि नित्य नी प्रह–
सन्मुखदि माताडु वरगळ नीडि नलिदाडु, नीडि नलिदाडु ॥ ३४ ॥

सिरियॆ सिरि महाभूति दायिकॆ परमॆ निन्नॊळगिर्प सुमह-
त्तरनवात्मक निधिगळूर्ध्वकॆ तंदु करुणदलि ।
करदि पिडिददनॆत्ति तोरिसि त्वरदि नी ऎनगित्तु पालिसु
धरणि रूपळॆ निन्न चरणकॆ शरणु ना माळ्पॆ, शरणु ना माळ्पॆ ॥ ३५ ॥

वसुधॆ निन्नॊळगिर्प वसुवनु वशव माळ्पुदु ऎनगॆ सर्वदा
वसुसुदोग्ध्रियु ऎंब नामवु निनगॆ इरुतिहुदु
असम महिमळॆ निन्न शुभतम बसुरिनॊळगिरुतिर्प निधियनु
बॆसॆसु ईगले हसिदु बंदगॆ अशनवित्तंतॆ, अशनवित्तंतॆ ॥ ३६ ॥

हरिय राणियॆ रत्नगर्भळॆ सरियु यारी सुरर स्तोमदि
सरसिजाक्षियॆ निन्न बसिरॊळगिरुव नवनिधिया ।
मॊरॆव हेमद गिरिय तॆरदलि तॊरॆदु तोरिसि सलिसु ऎनगॆ
परम करुणाशालि नमो नमो ऎंदु मॊरॆ हॊक्कॆ, नमो नमो ऎंदु मॊरॆहॊक्कॆ ॥ ३७ ॥

रसतळद सिरि लकुमिदेवियॆ शशि सहोदरि शीघ्रदिंदलि
असम निन्नय रूप तोरिसु ऎन्न पुरदल्लि ।
कुसुमगंधियॆ निन्ननरियॆनु वसुमती तळदल्लि बहुपरि
हॊसतु ऎनिपुदु निन्न ऒलुमॆयु सकल जनततिगॆ, सकल जनततिगॆ ॥ ३८ ॥

नागवेणियॆ लकुमि नी मनोवेगदिंदलि बंदु ऎन्नय
जागुमाडदॆ शिरदि हस्तवनिट्टु मुददिंद ।
नीगिसी दारिद्य दुःखव सागिसी भवभार पर्वत
तूगिसु नी ऎन्न सदनदि कनक भारगळा, कनक भारगळा ॥ ३९ ॥

अंजबेडवो वत्सा ऎनुतलि मंजुळोक्तिय नुडिदु करुणा -
पुंज मनदलि बंदु शीघ्रदि कार्य माडुवुदु ।
कंजलोचनॆ कामधेनु सुरंजिपामर तरुवु ऎनिसुवि
संजयप्रदळागि संतत पाही मां पाही, पाही मां पाही ॥ ४० ॥

देवि शीघ्रदि बंदु भूमिदेवि संभवॆ ऎन्न जननियॆ
कामनय्यन राणि निन्नय भृत्य नानॆंदु ।
भाविसीपरि निन्न हुडुकिदॆ सेवॆ नी कैकॊंडु मन्मनो
भाव पूर्तिसि करुणिसॆन्ननु शरणु शरणॊ०बे, शरणु शरणॊ०बे ॥ ४१ ॥

जागरूकदि निंतु मत्ते जागरूकदि ऎनगॆ नित्यदि
त्यागभोग्यकॆ योग्यवॆनिपाक्षय्य हेममय ।
पूग कनक संपूर्ण घटगळ योग माळ्पुदु लोकजननी
ईग ऎन्नय भार निन्नदु करॆदु कै पिडियॆ, अम्मा करॆदु कै पिडियॆ ॥ ४२ ॥

धरणिगत निक्षेपगळनुद्धरिसि नी ऎन्न मुंदॆ सेरिसि
किरिय नगॆमोगदिंद नोडुत नीडु नवनिधिय ।
स्थिरदि ऎन्न मंदिरदि निंतु परम मंगळकार्य माडिसु
सिरियॆ नीनॆ ऒलिदु पालिसु मोक्ष सुख कॊनॆगॆ, मोक्ष सुख कॊनॆगॆ ॥ ४३ ॥

निल्ले लकुमी स्थैर्य भावदि निल्लु रत्न हिरण्य रूपळॆ
ऎल्ल वरगळनित्तु ननगॆ प्रसन्नमुखळागु

ऍल्लो इरुतिह कनक निधिगळनॆल्ल नी तंदु नीडुवुदै
पुल्ललोचनॆ तोरि निधिगळ तंदु पॊरॆयम्म , तंदु पॊरॆयम्म ॥ ४४ ॥

इंद्रलोकदलिद्द तॆरदलि निंद्रु ऐन्नय गृहदि नित्यदि
चंद्रवदनॆयॆ लकुमि देवि नीडॆ ऐनगभया ।
निंद्रलारॆनु ऋणद बाधॆगॆ तंद्रमति नानादे भवदॊळु-
पेंद्र वल्लभॆ अभय पालिसु नमिपॆ मज्जननी, नमिपॆ मज्जननी ॥ ४५ ॥

बद्ध स्नेह विराजमानळॆ शुद्ध जांबूनददि संस्थितॆ
मुद्दु मोहन मूर्ति करुणदि नोडॆ नी ऐन्न ।
बिद्दॆ ना निन्न पाद पदुमकॆ उद्धरिपुदॆंदु बेडिदे अनि-
रुद्ध राणि कृपाकटाक्षदि नोडॆ माताडे, नोडॆ माताडे ॥ ४६ ॥

भूमि गत सिरिदेवि शोभितॆ हेममयॆ ऐल्लॆल्लु इरुतिहॆ
तामरस संभूतॆ निन्नय रूप तॊरॆनगॆ ।
भूमियलि बहु रूपदिंदलि प्रेमपूर्वक क्रीडॆगैय्युत
हेममय परिपूर्ण हस्तव शिरद मेलिरिसु, हस्तव शिरद मेलिरिसु ॥ ४७ ॥

फलगळीव सुभाग्य लकुमियॆ ललित सर्व पुराधि वासियॆ
कलुष शून्यळॆ लकुमि देवियॆ पूर्ण माडॆन्न ।
कुलजॆ कुंकुम शोभिपालळॆ चलित कुंडल कर्ण भूषितॆ
जलजलोचनॆ जाग्र कालदि सलिसु ऐनगिष्ट, सलिसु ऐनगिष्ट ॥ ४८ ॥

तायॆ चॆंददलंदयोध्यदि दयदि नीनॆ निंतु पट्टण-
भयव ओडिसि जागु माडदॆ मत्ते मुददिंद ।
जयव नीडिद तॆरदि ऐन्नालयदि प्रेमदि बंदु कूड्वदु
जयप्रदायिनि विविध वैभवदिंद ऒडगूडि, वैभवदिंद ऒडगूडि ॥ ४९ ॥

बॊरे लकुमि ऎन्न सदनकॆ सारिदॆनु तव पाद पदुमकॆ
तॊरि ऎन्नय गृहदि नीनॆ स्थिरदि नॆलॆसिद्दु ।
सार करुणारसवु तुंबिद चारुजलरुह नेत्रयुग्मळे
पारुगाणिसु परम करुणियॆ रिक्तनदिंद, रिक्तनदिंद ॥ ५० ॥

सिरियॆ निन्नय हस्त कमलव शिरदि नीने इरिसि ऎन्ननु
करुणवॆंबामृतद कणदलि स्नानगैसिन्नु ।
स्थिरदि स्थितियनु माडु सर्वदा सर्व राज गृहस्थ लकुमियॆ
त्वरदि मोददि युक्तळागिरु ऎन्न मुंदिन्नु, ऎन्न मुंदिन्नु ॥ ५१ ॥

नीनॆ आशीर्वदिसि अभयव नीनॆ ऎनगॆ इत्तु सादर
नीनॆ ऎन्न शिरदलि हस्तव इरिसु करुणदलि ।
नीनॆ राजर गृहद लक्ष्मियु नीनॆ सर्व सुभाग्य लक्ष्मियु
हीनवागदॆ निन्न कळॆगळ वृद्धि माडिन्नु, वृद्धि माडिन्नु ॥ ५२ ॥

आदि सिरि महालकुमि विष्णुविनमोदमय वामांक निनगनु-
वाद स्वस्थळवॆंदु तिळिदु नीनॆ नॆलॆसिद्दी ।
आदि देवियॆ निन्न रूपव मोददिंदलि तोरि ऎन्नॊळु
क्रोधविल्लदॆ नित्य ऎन्ननु पॊरॆयॆ करुणदलि, पॊरॆयॆ करुणदलि ॥ ५३ ॥

ऒलियॆ नी महालकुमि बेगनॆ ऒलियॆ मंगळमूर्ति सर्वदा
नलियॆ चलिसदॆ हृदय मंदिरदल्लि नीनिरुत ।
ललितवेदगळॆल्लि तनक तिळिदु हरिगुण पाडुतिर्पुवु
जलजलोचन विष्णु निन्नॊळु अल्लि नीनिर्पॆ, अल्लि नीनिर्पॆ ॥ ५४ ॥

अल्लि परियंतरदि निन्नय ऎल्ल कळॆगळु ऎन्न मनॆयलि
निल्लिसी सुख व्रात नीडुत सर्वकालदलि ।
ऎल्ल जनकाह्लाद चंदिर कुल्लदॆ शुभ पक्ष दिनदॊळु

निल्लदले कळॆ वृद्धियैदुव तॆरदि माडॆन्न, तॆरदि माडॆन्न ॥ ५५ ॥

सिरियॆ नी वैकुंठ लोकदि सिरियॆ नी पाल्गडल मध्यदि
इरुव तॆरदलि ऎन्न मनॆयॊळु विष्णु सहितागि
निरुत ज्ञानिय हृदय मध्यदि मिरुगुवंददलॆन्न सदनदि
हरिय सहितदि नित्य राजिसु नीडि कामितवा, नीडि कामितवा ॥ ५६ ॥

श्रीनिवासन हृदय कमलदि नीनॆ निंतिरुवंतॆ सर्वदा
आ नारायण निन्न हृदयदि इरुव तॆरदंतॆ ।
नीनु नारायणनु इब्बरु सानुरागदि ऎन्न मनदॊळु
न्यूनवागदॆ निंतु मनोरथ सलिसि पॊरॆयॆंदॆ, मनोरथ सलिसि पॊरॆयॆंदॆ ॥ ५७ ॥

विमलतर विज्ञान वृद्धिय कमलॆ ऎन्नय मनदि माळ्पुदु
अमित सुख सौभाग्य वृद्धिय माडु मंदिरदि ।
रमॆयॆ निन्नय करुण वृद्धिय सुमनदिंदलि माडु ऎन्नलि
अमरपादपॆ स्वर्णवृष्टिय माडु मंदिरदि, वृष्टिय माडु मंदिरदि ॥ ५८ ॥

ऎन्न त्यजनव माडदिरु सुररन्नॆ आश्रित कल्पभूजळॆ
मुन्न भक्तर चिंतामणि सुरधेनु नीनम्म ।
घन्न विश्वद मातॆ नीनॆ प्रसन्नळागिरु ऎन्न भवनदि
सन्नुतांगियॆ पुत्र मित्र कळत्र जन नीडॆ, कळत्र जन नीडॆ ॥ ५९ ॥

आदि प्रकृतियॆ बॊम्मनांडकॆ आदि स्थितिलय बीज भूतळॆ
मोद चिन्मय गात्रॆ प्राकृत देह वर्जितळॆ ।
वेदवेद्यळॆ बॊम्मनांडव आदिकूर्मद रूपदिंदलि अ-
नादिकालदि पॊत्तु मॆरॆवदु एनु चित्रविदु, एनु चित्रविदु ॥ ६० ॥

वेद मॊदलु समस्त सुररु वेद स्तोमगळिंद निन्न अ-
गाध महिमॆय पॊगळलॆंदरॆ शक्तरवरल्ल
ओदुबारद मंदमति नानाद कारण शक्तियिल्लवु
बोधदायकॆ नीनॆ स्तवनव गैसु ऎन्निंद, गैसु ऎन्निंद ॥ ६१ ॥

मंद निंदलि सुगुण वृंदव चंददलि नी नुडिसि ऎन्नय
मंदमतियनु तरिदु निर्मल ज्ञानियॆंदॆनिसु
इंदिरे तव पादपदुमद द्वंद्व स्तुतिसुव शकुति इद्दु
कुंदु बारद कवितॆ पेळिसु ऎंदु वंदिपॆनु, ऎंदु वंदिपॆनु ॥ ६२ ॥

वत्सन्वचनव केळे नी सिरि वत्सलांछन वक्षमंदिरॆ
तुच्छ माडदॆ मनकॆ तंदु नीनॆ पालिपुदु ।
स्वच्छवागिह सकल संपद उत्साहदि नी नीडि मन्मनो
इच्छॆ पूर्तिसु जननि बेडुवॆ नीनॆ सर्वज्ञॆ, जननि नीनॆ सर्वज्ञॆ ॥ ६३ ॥

निन्न मॊरॆयनुयैदि पूर्वदि धन्यरादरु धरणियॊळगा-
पन्न पालकॆ ऎंदु निन्ननु नंबि मॊरहॊक्कॆ ।
निन्न भकुतगनंत सौख्यवु निन्नलॆ परभकुति अवनिगॆ
निन्न करुणकॆ पात्रनागुवनॆंदु श्रुतिसिद्ध, ऎंदु श्रुतिसिद्ध ॥ ६४ ॥

निन्न भकुतगॆ हानि इल्लवु बन्न बडिसुवरिल्ल ऎंदिगु
मुन्न भवभयविल्लवॆंदा श्रुतियु पेळुवुदु ।
ऎन्न करुणाबलवु अवनलि घन्नवागि इरुवुदॆंब
निन्न वचनव केळि ई क्षण प्राण धरिसिहॆनु, प्राण धरिसिहॆनु ॥ ६५ ॥

नानु निन्नाधीन जननियॆ नीनु ऎन्नलि करुण माळ्पुदु
हीन बडतन दोष कळॆदु नीनॆ नॆलसिद्दु ।

मान मनॆ धन धान्य भकुति ज्ञान सुख वैराग्य मूर्ति
ध्यान मानस पूजॆ माडिसु नीनॆ ऐन्निंद, नीनॆ ऐन्निंद ॥ ६६ ॥

निन्न अंतःकरणदिंदलि मुन्न नाने पूर्ण कामनु
इन्नु आगुवॆ परम भक्त कुचेलनंददलि ।
बिन्नैपॆ तव पाद पद्मकॆ बन्न ना बडलारॆ देवि
ऐन्न नी कर पिडिदु पालिसु रिक्तनदिंद, पालिसु रिक्तनदिंद ॥ ६७ ॥

क्षणवू जीविसलारॆ निन्नय करुणविल्लदॆ अवनि तळदलि
क्षणिक फलगळ बयसलारॆने मोक्ष सुख दायॆ ।
गणनॆ माडदॆ नीच देवर हणिदु बिडुवी बाधॆ कोट्टरॆ
पणव माडुवॆ निन्न बळियलि मिथ्यवेनिल्ल, मिथ्यवेनिल्ल ॥ ६८ ॥

तनयनरि वात्सल्यदिंदलि जननि हाललि तुंबि तुळुकुव
स्तनवनित्तु आदरिसि उणिसुव जननि तॆरदंतॆ
निनगॆ सुररॊळु समर काणॆनु अनिमिशॆषर पडॆदु पालिपि
दिनदिनदि सुखवित्तु पालिसु करुण वारिधियॆ, पालिसु करुण वारिधियॆ ॥ ६९ ॥

एसु कल्पदि निनगॆ पुत्रनु आसु कल्पदि मातॆ नीनॆ
लेषविदकनुमानविल्लवु सकल श्रुतिसिद्ध ।
लेसु करुणासारवॆनिसुव सूसुवामृतधारदिंदलि
सोसिनिंदभिषेकगैदभिलाषॆ सलिसम्म, अभिलाषॆ सलिसम्म ॥ ७० ॥

दोषमंदिरनॆनिप ऐन्नलि लेष पुडकलु गुणगळिल्ल वि-
शेष वृष्टि सुपांसु कणगळ गणनॆ बहु सुलभ
राशियंददलिप्प ऐन्नघ सासिराक्षगशक्य गणिसलु
एसु पेळलि तायॆ तनयन तप्पु सहिसम्म, अम्मा तप्पु सहिसम्म ॥ ७१ ॥

पापिजनरॊळगग्रगण्यनु कोप पूरित चित्त मंदिर
ई पयोजभवांड पुडुकिदरारु सरियिल्ल
श्रीपनरसियॆ कॆळु दोषवु लोपवागुव तॆरदि माडि
रापुमाडदॆ सलहु श्रीहरि राणि कल्याणि, हरि राणि कल्याणि ॥ ७२ ॥

करुणशालियरॊळगॆ नी बलु करुणशालियु ऎंदु निन्नय
चरणयुगकभिनमिसि सार्दॆनु पॊरॆयॆ पॊरॆयॆंदु ।
हरण निल्लदु हणवु इल्लदॆ शरणरनुदिन पॊरॆव देवि सु-
परण वाहन राणि ऎन्ननु कायॆ वरवीयॆ, कायॆ वरवीयॆ ॥ ७३ ॥

उदर कर शिर टॊंक सूलिय मॊदले सृष्टियगैय्यदिरलौ-
षधद सृष्टियु व्यर्थवागुव तॆरदि जगदॊळगॆ ।
विधियु ऎन्ननु सृजिसदिद्दॆरॆ पदुमॆ निन्न दयाळुतनवु
पुदुगि पोदितु ऎंदु तिळिदा बॊम्म सृजिसिदनु, बॊम्म सृजिसिदनु ॥ ७४ ॥

निन्न करुणवु मॊदलु देवियॆ ऎन्न जननवु मॊदलु पेळ्वदु
मुन्न इदननु विचारगैदु वित्त ऎनगीयॆ ।
घन्न करुणानिधियु ऎनुतलि बिन्नहव ना माडि याचिपॆ
इन्नु निधियनु इत्तु पालिसु दूर नोडदले, दूर नोडदले ॥ ७५ ॥

तंदॆ तायियु नीनॆ लकुमि बंधु बळगवु नीनॆ देवि
हिंदॆ मुंदॆ ऎनगॆ नीनॆ गुरुवु सद्गतियु ।
इंदिरॆयॆ ऎन्न जीव कारिणिसंदेह ऎनगिल्ल परमा-
नंद समुदय नीडॆ करुणव माडॆ वर नीडॆ, करुणव माडॆ वर नीडॆ ॥ ७६ ॥

नाथळॆनिसुवि सकल लोकक्कॆ ख्यातळॆणिसुवॆ सर्व कालदि
प्रीतळागिरु ऎनगॆ सकलवु नीनॆ निजवॆंदॆ ।

मातॆ नीनॆ ऎनगॆ हरि निज तात ईर्वरु नीवॆ इरलि
रीतियिंदलि भवदि तॊळलिपुदॆनु निम्म न्याय, इदॆनु निम्म न्याय॥ ७७ ॥

आदि लकुमि प्रसन्नळागिरु मोदज्ञान सुभाग्य धात्रियॆ
छेदिसज्ञानादि दोषव त्रिगुणवर्जितळॆ ।
सादरदि नी कॊरॆदु कै पिडि माधवन निज राणि नमिसुवॆ
बाधॆ गॊळिसुव ऋणव कळॆदु सिरियॆ पॊरॆयॆंदॆ, अम्मा सिरियॆ पॊरॆयॆंदॆ॥ ७८ ॥

वचनजाड्यव कळॆव देवियॆ ऎचॆयॆ नूतन स्पष्ट वाक्पद
निचय पालिसि ऎन्न जिह्वाग्रदलि नी निंतु ।
रचनॆ माडिसु ऎन्न कवितॆय प्रचुरवागुव तॆरदि माळ्पुदु
उचितवॆ सरियॆनु पेळ्वदु तिळियॆ सर्वज्ञॆ, लक्ष्मी तिळियॆ सर्वज्ञॆ॥ ७९ ॥

सर्व संपददिंद राजिपॆ सर्व तेजोराशिगाश्रये
सर्वरुत्तम हरिय राणियॆ सर्वरुत्तमळॆ ।
सर्व स्थळदलि दीप्यमानळॆ सर्व वाक्यके मुख्य मानियॆ
सर्व कालदलॆन्न जिह्वदि नीनॆ नटिसुवुदु, अम्मा नीनॆ नटिसुवुदु॥ ८० ॥

सर्व वस्त्वपरोक्ष मॊदलू सर्व महापुरुषार्थ दातळॆ
सर्वकांतिगळॊळगॆ शुभ लावण्यदायकळॆ ।
सर्व कालदि सर्व धात्रियॆ सर्व रीतिलि सुमुखियागि
सर्व हेम सुपूर्णॆ ऎन्नय नयनदॊळगॆसॆयॆ, ऎन्नय नयनदॊळगॆसॆयॆ॥ ८१ ॥

सकल महापुरुषार्थदायिनि सकल जगवनु पॆत्त जननियॆ
सकलरीश्वरी सकल भयगळ नित्य संहारी ।
सकल श्रेष्ठळॆ सुमुखियागि सकल भावव धरिसि सर्वदा
सकल हेम सुपूर्णॆ ऎन्नय नयनदॊळगॆसॆयॆ, अम्मा नयनदॊळगॆसॆयॆ॥ ८२ ॥

सकल विध विघ्नापहारिणिसकल भक्तोद्धारकारिणि
सकल सुख सौभाग्यदायिनि नेत्रदॊळगॆसॆये ।
सकल कलॆगळ सहित निन्नय भकुतनादवनॆंदु सर्वदा
व्यकुतळागिरु ऎन्न हृदयद कमल मध्यदलि, हृदयद कमल मध्यदलि ॥ ८३ ॥

निन्न करुणा पात्रनागिह ऎन्न गोसुग नीनॆ त्वरदि प्र-
सन्नळाग्यधिदेवगणनुतॆ सुगुणॆ परिपूर्णॆ ।
ऎन्न पॆत्तिह तायॆ सर्वदा सन्निहितळागॆन्न मनॆयॊळु
निन्न पति सहवागि सर्वदा निलिसु शुभदायॆ, निलिसु शुभदायॆ ॥ ८४ ॥

ऎन्न मुखदलि नीनॆ निंतु घन्ननिवनॆंदॆनिसि लोकदि
धन्य धन्यन माडु, वरगळ नीडु नलिदाडु ।
अन्य ना निनगल्ल देवी जन्यनादवनॆंदु तिळिदु
अन्न वसनव धान्य धनवनु नीनॆ ऎनगीयॆ, लक्ष्मी नीनॆ ऎनगीयॆ ॥ ८५ ॥

वत्स कॆळॆलॊ अंजबेडवो स्वच्छ ऎन्नय करव शिरदलि
इच्छॆ पूर्वक नीड्दॆ नडि सरवत्र निर्भयदि ।
उत्सहात्म मनोनुकंपियॆ प्रोत्सहदि कारुण्य दृष्टिलि
तुच्छ माडदॆ वीक्षिसीगलॆ लक्ष्मी ऒलि ऎनगॆ, लक्ष्मी ऒलि ऎनगॆ ॥ ८६ ॥

मुददि करुण कटाक्ष जनरिगॆ उदयवागलु सकल संपद
ऒदगि बरुवुदु मिथ्यवल्लवु बुधर सम्मतवु ।
अदकॆ निन्नय पदव नंबिदॆ मुददि ऎन्नय सदनदलि नी-
नॊदगि भाग्यद निधिय पालिसु पदुमॆ नमिसुवॆनु, पालिसु पदुमॆ नमिसुवॆनु ॥ ८७ ॥

रामॆ निन्नय दृष्टिलोककॆ कामधेनॆंदॆनिसिकॊंबदु
रामॆ निन्नय मनसु चिंतारत्न भजिपरिगॆ ।

रामॆ निन्नय करद द्वंद्ववु कामितार्थव केळ्व जनरिगॆ
कामपूर्तिप कल्पवृक्षवु तानॆ ऎनिसिहुदु, वृक्षवु तानॆ ऎनिसिहुदु ॥ ८८ ॥

नववॆनिपनिधि नीनॆ इंदिरॆ तव दयाभिध रसवे ऎनगॆ
ध्रुवदि देवि रसायनवॆ सरि सर्वकालदलि ।
भुवन संभवॆ निन्न मुखवु दिवियॊळॊप्पुव चंद्रनंददि
विविधकळॆगळ पूर्णवाद्यखिळार्थ कॊडुतिहुदु, अखिळार्थ कॊडुतिहुदु ॥ ८९ ॥

रसद स्पर्शदलिंद लोहवु मिसुणि भावव ऐदो तॆरदलि
असम महिमळॆ निन्न करुण कटाक्ष नोटदलि ।
वसुधे तळदॊळगिर्प जीवर अशुभ कोटिगळॆल्ल पोगी
कुसुम गंधियॆ मंगळोत्सव सततवागुवुदु, उत्सव सततवागुवुदु ॥ ९० ॥

नीडु ऎंदरॆ इल्लवॆंबुव रूढि जीवर मातिगंजुत
बेडिकॊंबुदकीग निन्ननु शरणु हॊंदिदॆनु ।
नोडि करुण कटाक्षदिंदय माडि मनदभिलाषॆ पूर्तिसि
नीडु ऎनगखिळार्थ भाग्यव हरिय सहितदलि, भाग्यव हरिय सहितदलि ॥ ९१ ॥

कामधेनु सुकल्पतरु चिंतामणि सहवागि निन्नय
कामितार्थगळीव कळॆगळ्ळुणिसि इरुतिहवु ।
रामे निन्नय रसरसायन स्तोमदिं शिर पाद पाणि
प्रेमपूर्वक स्पर्शवागलु हेमवागुवुदु, हेमवागुवुदु ॥ ९२ ॥

आदि विष्णुन धर्मपत्नियॆ सादरदि हरि सहित ऎन्नलि
मोददिंदलि सन्निधानव माडॆ करुणदलि ।
आदि लक्ष्मियॆ परमानुग्रहवाद मात्रदि ऎनगॆ पदु पदॆ
आदपुदु सर्वत्र सर्वदा निधिय दर्शनवु, निधिय दर्शनवु ॥ ९३ ॥

आव लक्ष्मी हृदय मंत्रव सावधानदि पठणॆगैवनु
आव कालदि राज्यलक्ष्मीयनैदु सुखिसुवनु ।
आव महादारिद्य्र दोषियु सेविसॆ महा धनिकनागुव
देवि अवनालयदि सर्वदा स्थिरदि निलिसुवळु ॥ ९४ ॥

लकुमि हृदयद पठणॆ मात्रदि लकुमि ता संतुष्टळागि
सकल दुरितगळळिदु सुख सौभाग्य कॊडुतिहळु ।
विकसिताननॆ विष्णुवल्लभॆ भकुत जनरनु सर्व कालदि
व्यकुतळाद्यवरन्न पॊरॆवळु तनयरंददलि, लक्ष्मी तनयरंददलि ॥ ९५ ॥

देवि हृदयवु परम गोप्यवु सेवकनिगखिळार्थ कॊडुवुदु
भाव पूर्वक पंचसाविर जपिसॆ पुनश्चरण ।
ई विधानदि पठणॆ माडलु ता ऒलिदु सौभाग्य निधियनु
तीव्रदिंदलि कॊट्टु सेवकरल्लि निलिसुवळु, सेवकरल्लि निलिसुवळु ॥ ९६ ॥

मूरु कालदि जपिसलुत्तम सार भकुतिलि ऒंदु कालदि
धीरमानव पठिसलवनखिळार्थ ऐदुवनु ।
आरु पठणवगैय्यलिदननुभूरि श्रवणव गैद मानव
बारि बारिगॆ धनव गळिसुव सिरिय करुणदलि, सिरिय करुणदलि ॥ ९७ ॥

श्री महत्तर लक्ष्मिगोसुग ई महत्तर हृदय मंत्रव
प्रेमपूर्वक भार्गवारद रात्रि समयदलि ।
नेमदिंदलि पंचवारव कामिसीपरि पठणॆ माडलु
कामितार्थवनैदि लोकदि बाळव मुददिंद, बाळव मुददिंद ॥ ९८ ॥

सिरिय हृदय सुमंत्रदिंदलि स्मरिसि अन्नव मंत्रिसिडलु
सिरिय पति तानवर मंदिरदॊळगॆ अवतरिप ।

नरनॆ आगलि नारि आगलि सिरिय हृदय सुमंत्रदिंदलि
निरुत मंत्रित जलव कुडियलु धनिक पुट्टवनु, धनिक पुट्टवनु ॥ ९९ ॥

आवनाश्वीज शुक्ल पक्षदि देवि उत्सव कालदॊळु ता
भाव शुद्धिलि हृदय जप ऒंदधिक दिनदिनदि ।
ई विधानदि जपव माडलु श्रीवनदि संपदवनैदुव
श्रीवनितॆ ता कनकवृष्टिय करॆवळनवरत, करॆवळनवरत ॥ १०० ॥

आव भकुतनु वरुष दिन दिन भाव शुद्धिलि ऎल्ल पॊत्तु
सावधानदि हृदय मंत्रव पठिसलवनाग ।
देवि करुणकटाक्षदिंदलि देव इंद्रनिगधिकनागुव
ई वसुंधरॆयॊळगॆ भाग्यद निधियु तानॆनिप, भाग्यद निधियु तानॆनिप ॥ १०१ ॥

श्रीश पददलि भकुति हरिपद दास जनपद दास भावव
ईसु मंत्रगळर्थ सिद्धियु गुरुपद स्मृतियु ।
लेसु ज्ञान सुबुद्धि पालिसु वासवागिरु ऎन्न मनॆयलि
ईश सह ऎन तायॆ उत्तम पदवु नी सिरियॆ, उत्तम पदवु नी सिरियॆ ॥ १०२ ॥

धरणि पालकनॆनिसु ऎन्ननु पुरुषरुत्तमनॆनिसु सर्वदा
परमवैभव नानाविधवागर्थ सिद्धिगळा ।
हिरिदु कीर्तिय बहळ भोगव परम भक्ति ज्ञान सुमतिय
परिमितिल्लदॆ इत्तु पुनरपि सलहु श्रीदेवी, सलहु श्रीदेवी ॥ १०३ ॥

वादमाडुदकर्थ सिद्धियु मोदतीर्थर मतदि दीक्षवु
सादरदि नीनित्तु पालिसु वेददभिमानी ।
मोददलि पुत्रार्थ सिद्धियु ओददलॆ सिरि ब्रह्मविद्यवु
आदि भार्गवि इत्तु पालिसु जन्म जन्मदली, जन्म जन्मदली ॥ १०४ ॥

स्वर्ण वृष्टिय ऐन्न मनॆयलि करिय धान्य सुवृद्धि दिन दिन
भरदि नी कल्याण वृद्धिय माडॆ संभ्रमदी ।
सिरियॆ अतुळ विभूति वृद्धिय हरुषदिंदलिगैदु धरॆयॊळु
मॆरॆयॆ संतत उपमॆविल्लदॆ हरिय निज राणि, हरिय निज राणि ॥ १०५ ॥

मंदहास मुखारविंदळॆ इंदुसूर्यर कोटिभासळॆ
सुंदरांगियॆ पीतवसनळॆ हेमभूषणळॆ ।
कुंदु इल्लद बीज पूरित चंदवाद सुहेमकलशग-
ळिंद नीनॊडगूडि तीव्रदि बरुवुदॆन्न मनॆगॆ, बरुवुदॆन्न मनॆगॆ ॥ १०६ ॥

नमिपॆ श्री हरि राणि निन्न पद कमलयुगकनवरत भकुतिलि
कमलॆ निन्नय विमल करयुग ऐन्न मस्तकदी ।
ममतॆयिंदलि इट्टु निश्चल अमित भाग्यव नीडॆ त्वरदि
कमलजातळॆ रमॆयॆ नमो नमो माळ्पॆननवरत, नमो नमो माळ्पॆननवरत ॥ १०७ ॥

मातॆ निन्नय जठरकमल सुजातनागिह सुतन तॆरदि
प्रीति पूर्वक भाग्य निधिगळनित्तु नित्यदलि ।
नीत भकुती ज्ञान पूर्वक दात गुरु जगन्नाथ विट्ठलन
प्रीतिगॊळिसुव भाग्य पालिसि पॊरॆये नी ऐन्न, लक्ष्मी पॊरॆये, अम्मा पॊरॆये ॥ १०८ ॥

॥ इति श्री जगन्नाथ दासार्य विरचित श्री लक्ष्मी हृदय स्तोत्रम् समाप्ता ॥